शोध प्रतिवेदन

“उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन”

निर्देशिका
श्रीमती राजू पंसारी
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री
आशा गरेड़
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)

(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना

प्रत्येक प्राणी में अपने प्रजातीय गुणों के अनुसार सृजनशीलता होती है,, किन्तु मनुष्यों में अपनी उच्च मानसिक योग्यताओं के कारण सृजनशीलता अपेक्षाकृत अधिक होती है। मनुष्यों में भी सृजनशीलता समान नहीं होती है। कुछ व्यक्ति अधिक सृजनशील होते है, तो कुछ कम। हर युग, काल तथा देश में सृजनशील व्यक्ति पाये जाते है। इन्हीं सृजनशील व्यक्तियों पर राष्ट्र तथा समाज की उन्नति तथा उत्थान निर्भर हुआ करता है। मानव के क्रिया–कलापों एवं निष्पति के लिए सृजनात्मकता आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता का अत्यन्त महत्व है। सृजनात्मकता से ही छात्रों की प्रतिभा को मुखरित किया जाता है।

यदि हम अपने विकास पर दृष्टिपात करें तो देखेंगें कि प्राचीन युग से लेकर वर्तमान युग तक मानव ने तीव्र गति से परिवर्तन किया है। प्राचीन जीवन शैली परिवर्तित हो चुकी है। वर्तमान में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के साथ–साथ

आवश्यकताओं के अनुरूप अनेक आविष्कार एवं परिवर्तन हुए है, जो मानव की सृजनात्मक शक्ति के परिचायक है। नवीन परिस्थितियों का सामना तभी किया जा सकता है, जब व्यक्ति में सृजनशीलता की प्रतिभा को विकसित किया जाए । सृजनात्मक व्यक्तियों के व्यक्तित्व का एक लक्षण न होकर लक्षणों का समूह है, जिसे ''क्रियेटिविटि/सिन्ड्रोम'' कहते है। इन लक्षणों में प्रमुख है– साहसी कार्यों की प्रवृति, जिज्ञासा, आत्मविश्वास, बौद्धिक स्थिरता, विनोदीभाव, स्पष्ट विचारधारा, आत्म–अनुशासन, उच्च आकांक्षाऐं, स्वतंत्रता की आवश्यकता, लचीलापन सौन्दर्यात्मक आदर्श आदि।

बालक में सृजनात्मकता के विकास हेतु विद्यालय सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सृजनात्मकता के विकास में विद्यालय का वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। विद्यालय का स्वच्छ वातावरण बालक के मन को प्रसन्नचित रखता है तथा उसके अपसारी चिंतन को विस्तार मिलता है।

अध्ययन का औचित्य

सृजनात्मकता कुछ नया सृजन करने की विलक्षण योग्यता है। मूलरूप से किसी भी क्षेत्र में नवीन तथा मौलिक प्रकार से सृजन करना ही सृजनात्मकता है। सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक रूप में देखने को मिलती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सृजनात्मकता महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। लेकिन सभी विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का गुण एक समान नहीं पाया जाता है। अतः शोधकर्त्री के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई, कि क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में संकाय तथा लिंग के आधार पर अन्तर

पाया जाता है? अतः शोधकर्त्री द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अध्ययन के विषय के रूप में चयन किया–

शोधकर्त्री के मन में निम्नलिखित प्रश्न उत्पन्न हुए–

1. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्कता के आयाम–प्रवाहता में अन्तर पाया जाता है?
2. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–लचीलापन में अन्तर पाया जाता है?
3. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–मौलिकता में अन्तर पाया जाता है?
4. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर पाया जाता है?
5. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में अन्तर पाया जाता है?
6. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्कता में अन्तर पाया जाता है?

समस्या कथन :–

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

शोध के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–प्रवाहता के अन्तर का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–लचीलापन के अंतर का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–मौलिकता के अंतर का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
6. उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–प्रवाहता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–लचीलापन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–मौलिकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के कला के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तकनीकी शब्दावाली :–

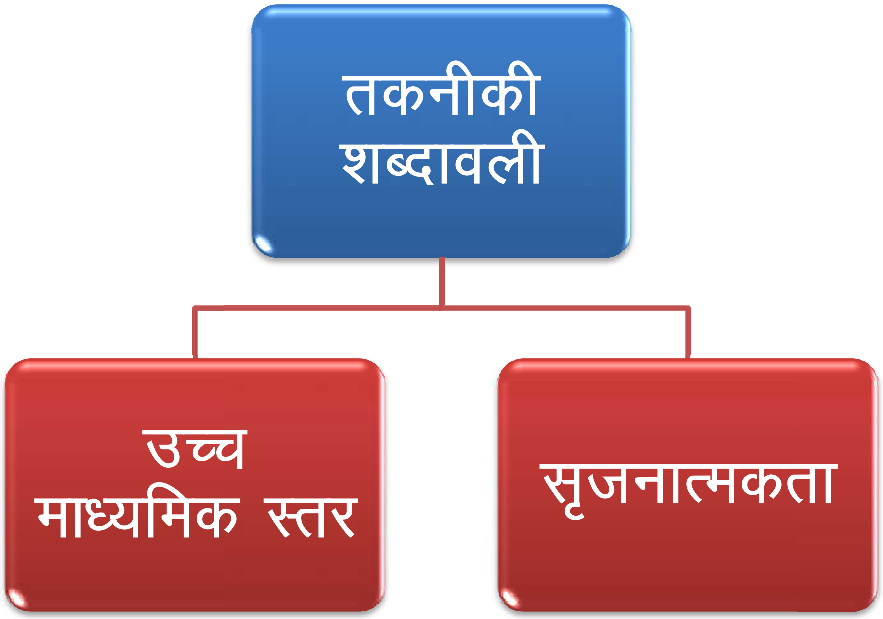

1. **उच्च माध्यमिक स्तर**–उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी वे बालक तथा बालिकाएँ है जो कक्षा 11 व कक्षा 12 तक अध्ययनरत् हो उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सम्मिलित है।

2. **सृजनात्मकता**– ''सृजनात्मकता'' या ''सृजनशीलता'' अंग्रेजी भाषा के ''क्रियेटिविटी'' (Creativity) शब्द काहिन्दी रूपान्तरण है। Webster के शब्दकोष के अनुसार 'Create' जब एक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है, तो उसका अर्थ ''बनाना'', ''मौलिक रूप से उत्पन्न होना'' या ''अस्तित्व में आना'' होता है तथा जब तक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो उसका

अर्थ योग्यता, शक्ति, कल्पना आदि से लगाया जाता है तथा 'Creativity' शब्द से तात्पर्य ''निर्माण करने की योग्यता'' से है। सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है, जिसके द्वारा वह उन वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है, जो अनिवार्य रूप से नए हो और जिन्हें वह व्यक्ति पहले से न जानता हो।

अनुसंधान विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि को अपनाकर शोधकर्त्री द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया।

अनुसंधान के चर :–

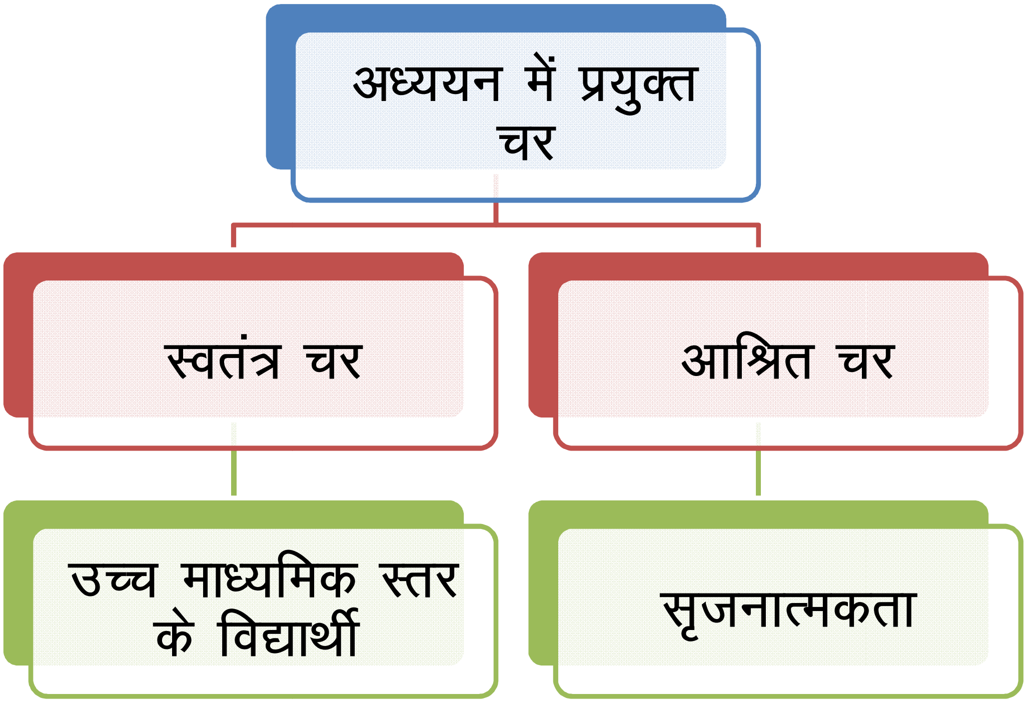

अध्ययन में प्रयुक्त चर
स्वतंत्र चर
आश्रित चर
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी
सृजनात्मकता

जनसंख्या :–

प्रस्तुत लघु शोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

न्यादर्श :–

उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 60 विद्यार्थियों को लिया गया है।

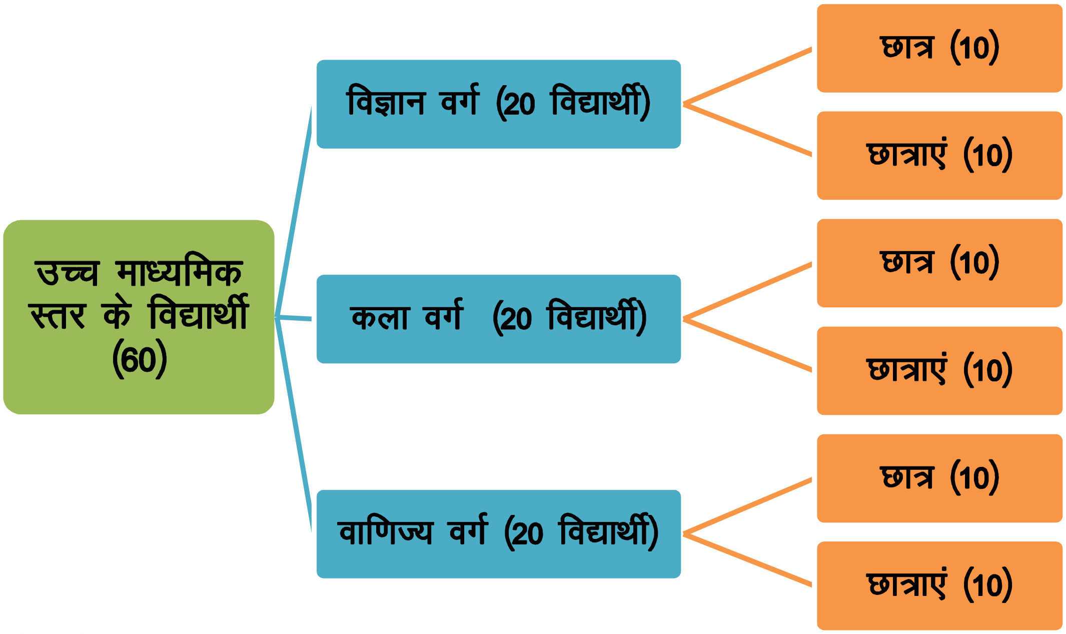
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी (60)
विज्ञान वर्ग (20 विद्यार्थी)
कला वर्ग (20 विद्यार्थी)
वाणिज्य वर्ग (20 विद्यार्थी)
छात्र (10)
छात्राएं (10)
छात्र (10)
छात्राएं (10)
छात्र (10)
छात्राएं (10)

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में मानीकृत परीक्षण डॉ. रोमापाल द्वारा निर्मित ''न्यू टेस्ट ऑफ क्रिएटिविटी'' का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति :–

शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में शोध प्रदत्तों की प्रकृति के रूप में मात्रात्मक प्रकृति के प्रदत्तों को प्रयुक्त किया गया है।

अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यकी :–

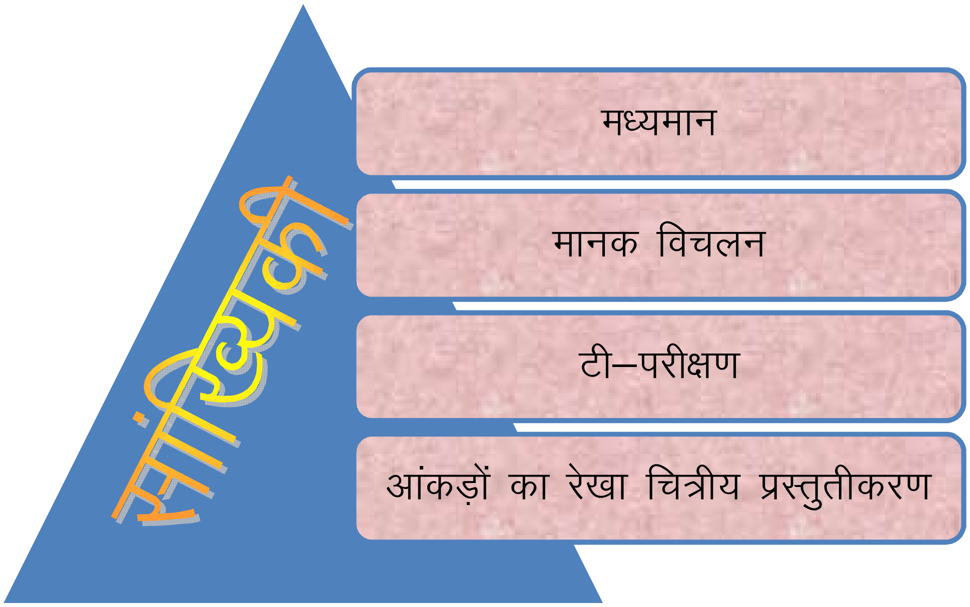
सांख्यिकी
मध्यमान
मानक विचलन
टी–परीक्षण
आंकड़ों का रेखा चित्रीय प्रस्तुतीकरण

समस्या का सीमांकन :–

प्रस्तुत लघु शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से है :–

1. शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में जयपुर जिले के 3 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 60 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ''सृजनशीलता'' मापने हेतु डॉ. रोमापाल द्वारा निर्मित– ''न्यू टेस्ट ऑफ क्रिएटिविटी'' टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और टी–अनुपात नामक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं के आधार पर तथ्यों का निष्कर्ष :–

परिकल्पना :– 1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–प्रवाहता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :–निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–प्रवाहता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

परिकल्पना :– 2उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–लचीलापन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :–निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–लचीलापन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

परिकल्पना :– 3उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–मौलिकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :–निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम–मौलिकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि

उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

परिकल्पना :— 4उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :—निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र—छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

परिकल्पना :— 5उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :—निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर केकला वर्ग के छात्र—छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि उच्च माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

परिकल्पना :— 6उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष :—निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के छात्र—छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि उच्च

माध्यमिक स्तर के सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अधिकार, समान वातावरण एवं समान अवसर प्रदान किये गये है एवं लिंग भेद के आधार पर भी कोई भेदभाव नहीं किया गया।

शैक्षिक निहितार्थ–

1. विद्यार्थियों के लिए सुझाव–

1. विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मकता के विकास के हेतु पत्र–पत्रिकाओं व दूरदर्शन का भी उचित उपयोग करना चाहिए।
2. विद्यार्थियों को अपने संवेगों पर नियंत्रण रखकर प्रत्येक कार्य को धैर्यपूर्वक करने की आदत का विकास करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मकता को विकसित व उन्नत बनाने हेतु समयानुसार समूहों में चर्चा करनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों को अपने में विद्यमान मौलिकता का प्रकाशन हर जगह करना चाहिए। तथ्यों का अंधानुकरण, दूसरों के अनुभवों की नकल करना या निष्क्रिय भाव से ज्ञान प्राप्त करना आदि सृजनात्मक अभिव्यक्ति में बाधक तत्वों से स्वयं को दूर रखते हुए अभिभावकों व शिक्षकों के सहयोग से अपनी प्रत्येक जिज्ञासा को शांत करने का व प्रत्येक कार्य में उत्साह व मौलिकता का परिचय देने का प्रयास करना चाहिए।

2. अध्यापकों के लिए सुझाव–

1. अध्यापकों को अपने अध्यापन कार्य में विभिन्न सहायक सामग्री का प्रयोग करते हुए रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित ढ़ंग से यथासम्भव समाधान करना चाहिए।
3. शिक्षकों को प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर समूह चर्चा, विचार–विमर्श, निष्कर्षात्मक समालोचना आदि का भी प्रसंगानुसार उपयोग करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति व समाज के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास हो, उनकी सृजनशीलता को बढ़ावा मिले, इसके लिए शिक्षक को विशेष ध्यान देना चाहिए।
5. शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थियों की रूचि, योग्यता व क्षमतानुसार विषय चयन में मदद करनी चाहिए।

3. समाज के लिए सुझाव–

1. यदि बालक कुछ नवीन सृजन करने की कोशिश कर रहा हो तो समाज द्वारा उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसको उचित प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. समाज द्वारा समय–समय पर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए, ताकि बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास हो सकें।

4. भावी शोध हेतु सुझाव–

1. वर्तमान अध्ययन में शोधकर्त्री ने शोध कार्य जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा है। अतः भविष्य में

यह अध्ययन राजस्थान के अन्य जिलों व राज्य स्तर पर भी किया जा सकता है।

2. भविष्य में शोध के लिए शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों को भी लिया जा सकता है।
3. भावी अनुसंधान में पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
4. भावी अनुसंधान में अंर्तमुखी व्यक्तित्व व बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया जा सकता है।
5. भावी अनुसंधान में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंगभेद के आधार पर सृजनात्मकता का अध्ययन किया जा सकता है।
6. भावी अनुसंधान में बी.एड. व बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय व सृजनात्मकता का अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध कार्य शोधकर्त्री का प्रथम एवं लघु प्रयास है। अतः अनेक कमियों का इसमें रह जाना स्वाभाविक है। शोधकर्त्री प्रस्तुत शोध के आधार पर कुछ परिणााम निकालने में समर्थ रही है। किन्तु शोधकार्य के ये परिणाम विशाल समुद्र में एक से एक लोटा पानी अलग करने के समान तुच्छ है। लेकिन जिस प्रकार विशाल अंधकार को चीरने की क्षमता एक छोटे से दीपक में होती है, उसी प्रकार शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध समुद्र में एक बूँद के समान लघु प्रयास है, फिर भी यह भावी शोध हेतु कुछ उपयोगी बन जाए, ऐसी मेरी अभिलाषा है।